

ASHA ARCHIVES

2996

ॐ गणेशाय नमः ॥ ॥ सुध्यान ॥ नित्यप्रसन्न
कितदिव्यमूर्तिः खड्गं त्रिशूलं चारुचमकं ॥ ३ ॥
सहस्रकालजानिपुरारिर्जयत्येषा सुरनामकारि ॥
॥ मेरुपुच्छे सुवासिनं संसारसोमिधमशुभम् ॥ पुराण
सिरसा देवि पृच्छति स्म जगद्धितम् ॥ १ ॥ श्रीपार्वत्युवा
च ॥ देवदेव महादेव भक्तानुग्रहकारकम् ॥ अत्य
मत्सुखिना माययन्तया पूर्वमुचितम् ॥ २ ॥ तदेव

त्वं महाबाहो लोकानुग्रहकारकम् ॥ तव मूर्तिपूजे
दस्य महाकालस्य साम्यतम् ॥ ३ ॥ सति मत्सुखं जयस्यो व
बुद्धिमेव जन्मन ॥ अकालमपुहरणमपमत्सु
निवारणम् ॥ ४ ॥ कानि मंत्रप्रथेदायेते मुक्तयस्तव शु
भम् ॥ प्रतिनामधेयैर्जनमोक्तमनुनायुतम् ॥ ५ ॥ श्री
ईश्वरोवाच ॥ नित्यप्रिये तमेगोसर्वलोकहिते रते ॥ गु
ह्याहुस्तुतरे दिव्यं सर्वलोकायकारकम् ॥ ६ ॥ शनिम्

तुं जये सोऽत्र प्रवक्ष्यामि तवाधुना ॥ सर्वसंगलसांग
 त्वसर्वशत्रुविमर्दकम् ॥ ७ ॥ सर्वरोगप्रशमनसुखाप
 दा निवारणम् ॥ शरीररोगप्रकरनसायुवृद्धिकरपरं
 ॥ ८ ॥ ॐ नमो श्री महाकालशानिर्भूतं जये सोऽत्र स्थापि
 प्यजायते नृपाजगति हृदः शानिर्द्विषताशविजंशानि
 श्वरायेति शानिः कालपुरुषायेति कालेकं अकालं न
 तु निवारणार्थं जयेति नियोगः ॥ ९ ॥ नृषिन्वासक

रं न्यासदेह न्यासं समाचरेत् ॥ महोगुं मूर्द्धि विन्यस्य
 विवैवस्वरं न्यसेत् ॥ गले तु विन्यस्य तदंवाको नैसागु
 हं न्यसेत् ॥ हृदि न्यसेत् महाकालं गुह्यं कृत्वा तु न्यसेत् ॥
 ॥ १० ॥ जान्वा कूर्चं चरित्य पादयोश्च शनैश्चरेत् ॥ एवं न्या
 शविधिं कृत्वा पश्चात्कालात्मानं शरीरे ॥ ११ ॥ न्यासं न्या
 नप्रवक्ष्यामि ततोऽप्यात्वा पथेन ॥ कालांदि युगभिदा
 श्च कालां गान् न्यास्य रुपिण ॥ १२ ॥ कालात्मानं न्यसेद्वा

नेमृ लुं जयेनमो नृते ॥ मन्वभराणि सर्वाणि महालस्य
 हृषिरा ॥ १५ ॥ भावयेत्युत्तिपत्यगेमहाका लायतेनमः ॥ भाव
 यत्यनवाशाद्यान् शिषेकात्तजितेनमः ॥ १६ ॥ नमस्तः
 नित्यसेवाय विन्यसेदधिनेवके ॥ मोरयेचनमस्तैलुगः
 एदयो विन्यसतत्तनः ॥ १७ ॥ श्रावरां भावयेद्दृष्ट्या नर्मः
 हृत्तनि भायच ॥ महोग्रायेनमो भाटु तथा श्रवरा योर्न
 तेत् ॥ १८ ॥ नमो वैदुर्निरिश्वाये चाश्विरो विन्यसेत्तु

रे ॥ नमो नित्यमयुषाय ग्रीवायां कार्तिके न्यसेः ॥ १९ ॥ मार्ग
 शिषे न्यसेद्वा होमा हारौ डयेतेनमः ॥ २० ॥ लोकनिवासाये
 पौषतु हृदयं न्यसेत् ॥ २१ ॥ नमः कालप्रयोधाय माधवाय
 दरे न्यसेत् ॥ मन्दगायेनमो मेत्यु न्यसेद्वै फलुने तथा ॥ २२ ॥
 कुर्वासे चैत्रमासेनमः शिवो डयाय च ॥ वैशाखविन्यसेत्तु
 न्यो नमः सत्यर्तकाय च ॥ २३ ॥ गंधयोर्मवये ज्ञेये मेरुवा
 यनमः सदा ॥ आषाढपादयोश्चैव दान्ये च नमः सदा ॥ २४ ॥

भावा

रिरो ॥ ३२ ॥ तिष्ठत्येव दक्षवाहो नमस्तु हुरमन्यवे ॥ सार्पन्य
सेवा नवाहुं उग्रावाहयेते नमः ॥ ३३ ॥ सखावि भावयेत्करोति न
मस्तु नमस्तु चारिरो ॥ सुखेन्यसे दुर्गार्धचनमस्तु रगुहाय च ॥
भावयेदक्षनासायामर्युता राय योगिरो ॥ ३४ ॥ भावयेदा
मनावायाहुस्तर्ध्वानिने नमः ॥ ३५ ॥ स्वाष्टुमसे दक्षकर्शक
शयभ्रिप्रियाय च ॥ स्वातिन्यस्येनामकर्शने मो प्रहसनयाये
ते ॥ ३६ ॥ विसावा दक्षन्यवेतु नमस्तु ज्ञान ईष्ये ॥ मित्रं न्यः

सेवा ननेत्रे नमो धोला च नाय च ॥ ३७ ॥ शाकं न्यसे च शिरसि
नमः स्वस्वर्तकाय च ॥ विष्णु न भावयेत्क्षीरं संधौ का ला
येते नमः ॥ ३८ ॥ प्रितियोगं भूयोः संधौ मज्ञानं नमो लुते ॥
नेत्रेयो संधौ वा पुष्ययोगं निष्पायते नमः ॥ ३९ ॥ सौभाग्यं
भावयेत्भासि शध्वौ फलाशनाये च ॥ शोभनं भावयेत्कर्तुं
संधौ पुण्यात्मने नमः ॥ ४० ॥ नमस्तु ह्यायाति गंगां हुतु संधौ
विभावययत् ॥ नमो निमो स देहाये रुक्मिणी शिरोधरे ॥ ४१ ॥

धृतिर्यस्य दक्ष वाहु पृष्ठे द्वाया सुताय च ॥ तन्मु तं सं यो भु
 लं च न्य से दुर्गा यते नम ॥ ४२ ॥ तत्कु प रै न्ये से दुर्गा नि त्या न
 दा ये ते नम ॥ द धित न्म रिण व ध्रे च का ल जा ये न मो न्य से त
 ॥ ४३ ॥ अ व त दं गु ली मु ले स्तु भ्यो रु ह्ना य ते नम ॥ व्या घा त
 ना ये ये द्वा म वा हु पृ ष्ठे रु सा य च ॥ ४४ ॥ दु र्गि त न न्म ता सं ॐ
 यो भु त सं ता पि ते नम ॥ तत्कु प रै व से दं जं सा न दा ये न मो
 न्य ते ॥ ४५ ॥ अ धि तं म रिण व ध्रे च न्य से का ला ज न ये न

च ॥ व्य ति घा तं क रा ग्रे तु न्य से का ल्य कृ ते नम ॥ ४६ ॥ व
 रि यां सं क्ष पा र्धे षु स ध्यो का ल्य व ते नम ॥ परि धं भा व ये द्वा
 म पा र्ध स ध्यो न मो गु दे ॥ ४७ ॥ न्य से द क्षी रु स ध्यो तु शि वा
 यो का ले सा क्षि रो ॥ त आ न्यो भा व ये त्स्मि दं स हं दे हा य ते
 नम ॥ ४८ ॥ सा ध्ये न्य से अ त दु ले स ध्यो यो रा य ते नम ॥
 न्य स्य त दं गु ला स ध्यो भु नं ल रौ दा ये ते नम ॥ ४९ ॥ न्य से
 वा मो रु स ध्यो च अ ह्म का ला मि दे न न ॥ अ स्त यो ग च

ल आनी न्यसे तस्योगिने नम ॥ ५० ॥ ऐ नुतर्गुत्प संश्रौ
 च योगाथि साये ते नम ॥ न्यसे तदगुति सथौ नमो भव्या
 यवे धृति ॥ ५१ ॥ चर्म शिव च दूरं भावये द्युतने नम ॥
 वातवं भावये दके संहारक नमो लुते ॥ ५२ ॥ ते तिलं
 भावये न्नां से आमा सधु वाये ते ॥ कीलवं भावये दः
 स्थि नमस्ते सर्व नक्षिरो ॥ ५३ ॥ गर न्यसे दशायां वसर्धगु
 साये ते नम ॥ न्यसे दशिराज न आयां सवर्त्तिक नमो

लुते ॥ ५४ ॥ विष्णवे वि भावये द्विष्टि नमो मन्त्र गुते
 जसे ॥ ई नुमि वपित वसु धारिने रोपतां श्रपं च च ॥ ५५ ॥
 मूर्द्धनां श्व दक्ष पाद नरेषु भावये नम ॥ रपगे साय च
 स्वस्थायये च राये च रूपि रो ॥ ५६ ॥ पुरुकुत सत मरव
 विष्णवे धो विष्टु सथा ॥ मुकुतां श्व वा मपाद नरेषु भा
 वये नम ॥ ५७ ॥ सत्य व्रताय सत्याय नित्यं सत्याय ते नम
 ॥ सिद्धे श्व रं नमस्ते लु योगे श्वर नमो लुते ॥ ५८ ॥

वक्रि नक्त चरु चैव वरु नार्थमयो निकान् ॥ मुहुर्तांश्च
 दक्ष हस्त नरेषु भार्गव नम ॥ ५४ ॥ तन्मो देवा यदि द्या
 यमाग्नि रोदस दृष्टये ॥ वक्राये चाति के ऊराय नमस्तवा
 म दृष्टये ॥ ६० ॥ याम हस्त नरेषु च वरो शाय नमो सुते ॥
 भिरि साहिर्बुध्य पूषा जपादाश्वाश्च भावयेत् ॥ ६१ ॥
 राशि भोक्त्रे शिगा य राशि भ्रम न कारिने ॥ रासिनाथा य
 रासिना फलदा त्रे निमो सुते ॥ ६२ ॥ यमाग्नि चन्द्रादिति

मि ३

कवि पातु अवि भावयेत् ॥ कुर्वदक्ष हस्त नरेषु च त
 कात्यायने नम ॥ ६३ ॥ तुलो अस्थाय सौ अस्थाय नम
 कुं भाग हाय च ॥ सस्मि रत्नं पु जिवांश्च विहनुति गम शु
 तिन्यसेत् ॥ ६४ ॥ कुर्वु याम हस्त नरेषु च यगु हवि चारि
 रो ॥ तुष्टाय च वरि ष्ठा य नमो रा दु स आ य च ॥ ६५ ॥
 भौम वारे न्य सै त्वा ते म नो बु ह्न रु पि रो ॥ मे ठे न्य सै त्वा
 म्य वारानमो जिव त्वा रु पि रो ॥ ६६ ॥ वृष ने गुरु वारं च

नमो भवस्वरूपीणे ॥ नृगुणारंभतद्वारेनमः प्रत्ययेकारि
णि ॥ ६७ ॥ पादयोऽनिवारं च निजसायनमौलुने ॥ न्यसे
द्यटि काकेशेषु नमस्ते स्वरूपीणे ॥ ६८ ॥ कालरूपिनस्ते
नुमर्वपापप्रणाशिनै ॥ त्रिपुरस्य वधार्थाय शंभुजाताये
नेनमः ॥ ६९ ॥ नमः कालशरिराय कालरूपाय तेनमः ॥
काले ह्येतानमस्तुभ्यं कालानन्दाय तेनमः ॥ ७० ॥ अखं
राट्टराट्टमानाय त्वनाशनायै नमः ॥ कालदेवाय का

लाय कालकालाये तेनमः ॥ ७१ ॥ निमेषादिमाहाक
ल्प कालरूपेणै रवं ॥ नृत्तु अयमहा काल नम
स्वामि स नैश्वरं ॥ ७२ ॥ अकालमृत्यु हरतां स पन्तु नि
वारणम् ॥ नृत्तु ७३ ॥ दुर्निरीक्ष्ये स्थिते मंसि ध
र्षलोचनः नृत्तु ७४ ॥ दातारं सर्व निव्यानां भक्तानां
करम् ॥ नृत्तु ७५ ॥ कारणं सर्व दुःख
रूपिने मृत्यु ॥ ७६ ॥ कर्तारं सर्व

नमो वरुणं ॥ मृत्यु ॥ ७७ ॥ ह नो रि
स च कारिणां ॥ मृत्यु ॥ ७८ ॥ सर्वे धाम
तम वाय ॥ मृत्यु ॥ ७९ ॥ अहं नागुह नून च
कम् ॥ मृत्यु ॥ ८० ॥ काल स्य रसगास च निव
स ॥ अतस्ती काल पुरुष पुन नो शिवा जने
न देव जगत्सर्व काल स्य पुती यते ॥ ८१
कर्ताः पुराणा न्य व मुचिरे ॥ ८२ ॥ काल

काः तात्मागुह देवता ॥ च राडी शोरुदुदा
राडी शठ च ते ॥ ८३ ॥ विद्युदा कलि नो
रसाधिकं ॥ च राडी डाः सुके संयुक्ताः
न पुन ॥ ८४ ॥ अत ज स्या मसि शो वि
दा युन ॥ न मा त्री मनु रि त्ये ष ड्वा
८५ ॥ आ च त्रे स्त्री त्र शत मनु
शु पादा पि ध्या त्या सं पू ज्य न क्ति त

भयनैव शतवर्षावधिप्रिय ॥ अथ राह
विस्फोटकसूका ॥ ८७ ॥ दीवासी
कालजपेनरे ॥ जन्मक्षेत्रयदासी
कम् ॥ ८८ ॥ विधरोवामयेधेवाजपेद
मियेकादशेनन्दतनोवाचासूयेपिशा
वेद्यावन्येठतायहिनापपि ॥ चतुर्थे
नवपंचमे ॥ ८९ ॥ गोचरेजन्मलगे

दि २

चगुरुनाद्यवचनारोन्पठेदा
मेकद्वयं पाठशतगुणकदाचन ॥ आ
पापानिवजपयुजे ॥ ९० ॥ महाकात्या
वाजलसंनिधौ ॥ पुनश्चैवेष्टनिम
गुहे ॥ ९१ ॥ नीयमेनैकनमेनप्र
श्रुतव्यपठितव्यचसाधकानां सु
स्वस्ति यनेपुराणं सोऽयं नृपुंजया

कथितं न्यासक्रमसमन्विनं ॥ १५ ॥
भूवा पूजाया वै नीजामुखे ॥ पठन
द्युसर्पदिनो भवन् ॥ १६ ॥ नागिन
देशान्तरधवा ॥ नाकाले मरुतने ध
वै ॥ १७ ॥ आयुर्वर्षे दानं सागु
तपरतुरं स्तोत्रं शनि तुष्टि क
त्यदं तोत्रमेतन्मया दितं ॥

दात्मनो हितम् ॥ १८ ॥
कस्यचित् ॥ १९ ॥ इति श्री
जनिमृत्युं जयस्तोत्रं समाप्तं
इत्यातादृशं लिखितं मया यदीमुच्य
नदियते ॥ इति सम्पत् ॥ २० ॥ पदसा
रोजं श्रीमद्विष्णोर्नामैरवसानं

२२०

शानिभित्तु वज्रयशोव

गृहपूजा रक्षा च

ASHA ARCHIVES

2996

१ श्रीगणेशायनमः॥

अद्यात्पादि०॥ आदित्य
प्रत्यविदेवताय इदमासे
नमः॥ 'व्यानी' ॥ पश्चात्तनपश्च
मद्विति॥ तत्प्राश्चरथसंयु
त्तदारवि॥ 'व्यानं पुष्पे नम

दि०॥ 'दप दीप॥ नैवेद्यं०॥
कुं सः त्वाहा॥ त्वाच॥ कलिकु
सा पात प्रसी नव॥ काश्यपी
जानिन मोलुने॥ आदित्या च
सोमं प्रजा॥ सोमाय उमाय आ
य इदमासे नमः पुष्पे नम

।। म्या र वरो दसा शो हे म पूष
दि वा ऊ श्व के र्त व्या व र दः श हि
न मः ॥ ॐ वा हु ना दि वृष दी प
आ प ॥ ॐ मिं मौ स त्या हा ॥ नै
चतु र्दश्यां कृति का या यं स मु
त्र सं जा त नि ता कर न मौ कृ

ए ० ॥ ॥ ॐ ऊ र पू जा ॥ ३
क्षि नि व त्प धि दे व ता य
पु र्ण न म ॥ ॐ न ॥ र क म
नि श्र लो ग दा व र ॥ चतु र्भु ज
द स्या द रा तु नः ॥ ॐ न पु र्ण न
हु ना दि ० वृ ० दी प ० ॥ नै वे द्य ०

ॐ स्वाहा ॥ त्रिनेत्र ॥ दशगुण ॥ जद
पूर्वाषाढा सुसंभवः ॥ भारद्वाजं
ऊः नायनमो सुने ॥ अंशु एव ह
बुध पूजा ॥ बुधना रायनाय विद्
वता यद्दमा स न नमः पुष्प
नमाः त्वं वदधं रोक रिंका ॥

खड्ग चर्मगदापाणिनिंद
व्यान पुष्पं नमः ॥ वाह भौ
वीधौ स्वाहा ॥ त्रिनेत्र ॥ वने द्वादशी
मद्यवाप्यममुद्रव ॥ ना रायनाय विदे यत्पं
बुध वैश्वनरमो सुने ॥ बुधना रायनाय ॥
दृश्यति पूजा ॥ वृहस्पति ॥ सति एतु वत्प

विदेवाय इदमासनं नमः पुष्पं नमः ॥ ध्या
नं ॥ कुंकुमाभसुराचार्य विदं दन्व कर्मरा
नु ॥ अद्वैतभयचतुर्वाङ्मुखरमं श्रीवरप्रद ॥
वृहस्पतेः व्याजपुष्पं नमः ॥ आवाहनोदि
धूपं दीपं ॥ नैवेद्यं ॥ आपं ॥ ज्ञानं ॥ ज्योति
स्त्रोह ॥ गीतं ॥ मित्रं ॥ देवैः शोभनं ॥ फलं ॥ गु

रूपं मेकादशपां गुरोर्द्रव ॥ वृक्षा विदेवदेवे
शक्तिप्रजाती नमोस्तुते ॥ वृहस्पत्यार्चना
विबो ॥ ॥ शुक्रपूजा ॥ शुक्राय शक्राय
शक्तिप्रत्यक्षिदेवताय इदमासनं नमः पुष्पं २
॥ ध्यानं ॥ देवदेव गुरु नमोस्तुते नमोस्तुते चतुर्भु
जैः ॥ दक्षिणो वरदो कार्योत्सादात्तु वक्रम

शौराखनगरेद्रव॥ यमाधिदेवदेवेशंतु
दुजाती॥ नमोस्तुते॥ शनिश्चराचरा
विद्यो॥ ॥ एतद्रूपा॥ रादेवकाला
यलर्ष्यप्रत्यविदेवातायइदमासननम
पुष्प॥ ॥ वान॥ करालवदनचोरखड्ग
नवरुपदं॥ नीलमिहासनस्थश्चराकर

त्रपशशपते॥ वानपुष्पनमः॥ आकाश
नादिपुष्पदापः॥ नैवेद्यनमः॥ आप॥
ॐ श्रीं श्रीं सस्वाहा॥ लोच॥ शारिङ्गजो
नभरणी पूर्णामास्यामलज्योत्स्व॥ एतद्रू
पाकाधिदेवतंतुदुजातीनमोस्तुते॥ रा
एतद्रूपाविद्योतनसर्व॥

॥ केतु पूजा ॥ केतु वेचि च गु प्रा य वला प्र
त्यपि देवता य इदमा स न न मः ॥ पुष्प ० ॥
॥ ध्यानं ॥ वृद्धा द्विवाह वः सर्वगदितो विरु
ता न ना ॥ गृहा स न गता नि त्पं केतु वैश्य
वर उ द ॥ ध्यान पुष्प न मः ॥ आ वा ह ना दि
रूप दीप ॥ नैवेद्य न मः ॥ जाप ॥ क्रौं क्रौं

क्रौं सत्वा हा ॥ लो च ॥ लो च ॥ श्री प र्व म मा
वा त्या मञ्जु पा ये नु नि स था ॥ चि च गु प्रा
धि देव त्पं श्रु द जा नि न मो लु ते ॥ केतु म
हा र्चन वि वा त न्त र्व परि पू र्ण म म् ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीनवगुहाय नमः॥
जवाकुशमसंकासंकाशपियमहादितं॥ तमो
रिसर्वपापघ्नपुण्यमामिदिवाकरं॥ १॥ दक्षिणं
तुषारभक्षिरोदानवशंभव॥ नमामिशसिनं
देवसंभोमुकुतभूषणं॥ २॥ धररागगर्भसंभू
तविप्रतेजसमपुर्णं॥ कुमारंशक्तिहस्तं तं मंग

रंपुण्यमाम्यहं॥ ३॥ प्रियंगुकलिकाश्यामंरूपं नो
पुतिमंतुथं॥ सौम्यसौम्यगुणोपेतं तं नमामिशः
शिनंतुत॥ ४॥ दिवानां च हृषिनां च गुहका च र
नसंनिभं॥ ५॥ सुसूत्रितिलोकाशंपुण्यमामिव
हृष्यति॥ ५॥ ह्रीमकुन्दमनालाभंदैत्यानां पर
मंगुहं॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं पुण्यमाम्यहं
॥ ६॥ नीलाश्वननिभंदेहैरविपुत्रासहावला॥

कायायगर्भसंभूतपुराणामिश्रानैश्वर॥७॥अ
हं कायमहावीर्यचन्द्रादित्यप्रमर्दव॥सिंहि
कागर्भसंभूततं एह पुराणाम्यहं॥८॥पलाल
धूमसंकीर्णारागहनमस्कृतं॥रुद्ररुद्रात्मकं
द्यौरतं केतुपुराणाम्यहं॥९॥सुभ्राभोरुहसंका
सं सर्वदेवनमस्कृतं॥अचिंतं सर्वदेवानां जन्म
देवनमाम्यहं॥१०॥इति व्यासेन कथितं यपप्यं

तिमानवा॥दिवाचायदिवांरात्रौसमेषुविसमेषु
च॥११॥अभिप्रेतार्थसिद्धार्थसुपुसन्नानवगु
ह॥सुधीतास्तु सदा तेषां पीदा देहा व्यापो हति
॥१२॥इति श्री व्याशकृतं नवगुहस्तोत्रसंम्यहं
समाप्तं॥ ॥

गद्य

नमो कर्वा कर्वा राम नमो भर्वा नमो
नमो भर्वा नमो भर्वा राम ॥: ऐव
नमो भर्वा नमो भर्वा राम ॥: ऐव
नमो भर्वा नमो भर्वा राम ॥: ऐव



